जगदीश गुप्त के काव्य एवं चित्रकला में अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन

हिन्दी विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोध छात्रा

अंजली

सह-शोध निर्देशक
डॉ. कुमार जिगीषु
असिस्टेंट प्रोफेसर
ललित कला महाविद्यालय
नई दिल्ली

शोध निर्देशिका
डॉ. नमस्या
एसोसिएट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा - 282005

2025

जगदीश गुप्त के काव्य एवं चित्रकला में अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना: -

एक सच्चा कलाकार आजीवन अपनी ही खोज में रहता है और कभी-कभी खुद की तलाश करते हुए वह कई विधाओं की देहरी पर दस्तक देते नजर आता है। साहित्य में भी कई ऐसे कलाकार हुए जिन्होंने न केवल साहित्य लेखन किया बल्कि कलाओं के विभिन्न माध्यमों के द्वारा अपने विचारों की भावाभिव्यक्ति की। भारतवर्ष में सदैव ही साहित्य ने कला के रूप को समृद्ध किया है और कला ने साहित्य की व्याख्या की है। इसका पारस्परिक संबंध हमारी संस्कृति का एक अत्यंत विशिष्ट और रमणीय पक्ष है। इस पक्ष के उत्तरोत्तर उद्घाटन और व्याख्यान से हमें कला और साहित्य दोनों को परखने की नई एवं समग्र आँख प्राप्त होगी और दोनों में रस प्रतीति का एक नया मार्ग उपलब्ध होगा। साहित्य, मूर्ति और चित्रकला के अंत: संबंधों की ओर **श्रीकृष्णदत्त वाजपेयी** ने भी इंगित किया है कि **गुप्त काल** में अनेक प्रकार की नौकाओं तथा जहाजों के प्रमाण तत्कालीन साहित्य, मूर्तिकला एवं चित्रकला में मिलते हैं। इस काल में प्रयुक्त नौकाओं और जहाजों के स्वरूप का आभास चित्रकला एवं मूर्तिकला में मिलता है। अजंता की गुफाओं और गुप्तकाल में बिहार नौकाओं तथा बड़े पोतों के चित्र मिले हैं। इनमें से कई चित्र परवर्ती गुप्तकाल के हैं। ये उद्धरण भी कला और साहित्य के समान आचरण पर प्रकाश डालते हैं।

भारत में कृष्णकाव्य के उत्कृष्ट भावों को चित्रों में बदलने की लंबी परंपरा रही है। **गीत गोविंद** और **भगवतपुराण** के कई रोचक प्रसंगों को चित्रों में उतारा गया है। सूफी जन कवि अमीर खुसरो भी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे न केवल एक कुशल कवि बल्कि एक शायर व संगीतकार भी थे। आज जिसे हम हिंदुस्तानी संगीत कहते है, उसकी रचना में अमीर खुसरो का बहुत बड़ा हाथ है। ख़याल, तराना, दोहा इत्यादि कई रागों और तालों का उन्होंने आविष्कार किया। उन्होंने ईरानी और हिन्दुस्तानी साजों को मिलाकर सितार का आविष्कार किया। तबले का वर्तमान रूप अमीर खुसरो की ही देन है। काशी के कला भवन में देखिए कि बिहारी और केशव की कुछ पंक्तियों की विषयवस्तु को बड़ी मार्मिकता के साथ चित्रों में कैसे उपस्थित किया गया है। संपूर्ण बिहारी सतसई को एक जर्मन चित्रकार ने चित्रों में प्रस्तुत करने की कोशिश की है। बहुत हद तक वे सफल भी हुए हैं। व्यावहारिक जगत का अनुभव बताता है कि चित्रधर्मी काव्य और काव्यधर्मी चित्र बहुत अधिक प्रभावशाली प्रमाणित होते हैं। रवीन्द्र नाथ ठाकुर के रूप में एक ऐसा कलाकार शख्स हमें संस्कृति के

विश्व में चमकता दिखाई देता है। वे एक साथ कविता, कहानी, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला आदि विधाओं में आवाजाही करते हुए अपनी और जगत की कही-अनकही को उकेरते रहे। इस तरह उन्होंने अपनी विभिन्न विचारधाराओं को अलग-अलग विधाओं में व्यक्त किया। द्विवेदीयुगीन हिंदी कवि नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने राजा रवि वर्मा के चित्रों पर बहुत सी कविताएं लिखीं थीं। जिनका प्रकाशन नियमित रूप से सरस्वती में होता था। आधुनिक भारतीय चित्रकला के प्रमुख दो चित्रकारों **यामिनी राय** और **जॉर्जकीट** ने भारतीय काव्य में वर्णित कृष्ण संबंधी भावभूमि के आधार पर कई कालजयी चित्रों की रचना की है। इस संबंध में सबसे अच्छा उदाहरण दिनकर की कृति **उर्वशी** के कुछ चित्र हैं जिन्हें उर्वशी की कुछ पंक्तियों के आधार पर प्रसिद्ध चित्रकार **उपेन्द्र महारथी** ने बनाया है। वे चित्र उर्वशी में ही संकलित हैं। इसी प्रकार छायावाद की श्रेष्ठ कवयित्री **महादेवी वर्मा** जी की **'दीपशिखा'** और **'सांध्यगीत'** में कविताओं के साथ चित्रों का संकलन भी है। हिंदी में ऐसे कई कवि – कलाकार व कला समीक्षक – कवि हुए हैं जिन्होंने शब्दों और चित्रों दोनों तरह से भावाभिव्यक्ति की हो। जिनमें **महादेवी वर्मा, सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', शमशेर बहादुर सिंह, मलयज, विपिन कुमार अग्रवाल, जगदीश गुप्त, राजेन्द्र किशोर पण्डा, नेमिचन्द्र जैन, अशोक वाजपेयी, जयसिंह नीरज, उदय नारायण तिवारी, पंकज सिंह, मंगलेश डबराल, मिथिलेश श्रीवास्तव, सौमित्र मोहन** आदि का नाम आता है। जिनमें से शोधार्थी ने अपने शोध लेखन के लिए **जगदीश गुप्त** को चुना है।

कवि एवं चित्रकार जगदीश गुप्त जी का कलाकर्म साहित्य व चित्रकला के बीच एक सुंदर सेतु है। डॉ. गुप्त के रेखांकन में उनका कवि रूप बोलता है इसीलिए उनके चित्र सुन्दर कविता जैसे सरस, सरल और प्रिय लगते हैं और शायद इसी कारण रंगों की नई भाषा और भाव उनके चित्रों में मिलते हैं, तो कविताओं में पूरी चित्रात्मकता।

चेतना की चादर पर चमत्कार सुलभ चाँद तारों को चितेरना ही एक अदद वाक्य में जिनका परिचय है। चेतना के चितेरे कवि **डॉ. जगदीश गुप्त** का जन्म उत्तर प्रदेश में हरदोई जिले के आंझी- शाहाबाद कस्बे में **3 अगस्त 1924 ई.** को हुआ था। मगर कार्यालयी जन्मतिथि **5 जुलाई 1926 ई.** होने के कारण उनके परिचित भी उनकी वास्तविक जन्मतिथि से अनभिज्ञ हैं। उनकी माता का नाम श्रीमती रमादेवी तथा पिता का नाम शिवप्रसाद गुप्त था। अपने पिता की सात संतानों में एकमात्र जगदीश ही जीवित रहे। 10 वर्ष की अल्पायु में ही पिता के निधन हो जाने के दो वर्षों बाद बारह वर्षीय

जगदीश अपने मामा के यहाँ रहने लगे।

वास्तव में डॉ. जगदीश गुप्त को चित्रकला तथा कविता की प्रेरणा अपने **मामा श्रीरामस्वरूप गुप्त 'ललाम'** से प्राप्त हुई। उनके मामा प्रसिद्ध चित्रकार थे।

डॉ. जगदीश गुप्त उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु इलाहाबाद आए, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्नातक परीक्षा 1945 ई. में उच्च द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। स्नातकोत्तर परीक्षा 1947 ई. में हिंदी विषय में प्रथम स्थान एवं स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1945 ई. में चित्रकला में एवं 1951 ई. में संस्कृत में डिप्लोमा किया। डॉ. जगदीश गुप्त ने **"गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन"** विषय पर **डॉ. धीरेंद्र वर्मा** के निर्देशन में शोधकार्य (डी. फिल.) किया। भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में यह प्रथम शोधकार्य था। डॉ. गुप्त की प्रथम नियुक्ति प्रयाग विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के लेक्चरर के रुप में 22 नवम्बर 1950 ई. को हुई।

प्रयाग विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक के रूप में सेवारत डॉ. जगदीश गुप्त ने हिंदी साहित्य को ऊंचाइयाँ प्रदान करते हुए विभाग के गौरव को समुन्नत किया। क्योंकि चित्रण और कविता की प्रेरणा इन्हें बचपन से ही उपलब्ध थी। अतः इस दिशा में इनका वैशिष्ट्य कालचक्र की गति के अनुरूप प्रौढ़ होता चला गया। **आचार्य क्षितेंद्रनाथ मजूमदार** जैसे ख्यातिप्राप्त चित्रकार से चित्रकला की शिक्षा ग्रहण करने के बाद इनके भीतर का चित्रकार जागृत हो गया और फिर वह अंतरराष्ट्रीय स्तर तक अपनी दिशा में परिभ्रमण करता रहा।

प्रख्यात कवि एवं चित्रकार डॉ. जगदीश गुप्त कविता व चित्रकला में समान और सार्थक हस्तक्षेप के लिए जाने जाते हैं। बहुत विरले ही ऐसे लोग हैं जिन्होंने कविता या अन्य किसी विधा में लेखन के अलावा चित्रकला में भी काम किया हो।

डॉ. जगदीश गुप्त का रचना संसार :-

डॉ. जगदीश गुप्त द्वारा स्वरचित काव्य कृतियाँ (कविता संग्रह) निम्नलिखित हैं –

1. नाव के पाँव (1955 ई.)

2. शब्द दंश (1959 ई.)

3. हिम – बिद्ध (1964 ई.)

4. आदिक एकान्त (1980 ई.)

5. माँ के लिए (1980 ई.)

6. सांझ (1988 ई.)

7. बहुलोचना नदी (1996 ई.)

8. आक्रोश के पंजे (1996 ई.)

संवाद काव्य:-

1. युग्म चित्रांवित काव्य (1973 ई.)

2. शंबूक (1977 ई.)

3. छन्दशती (1979 ई.)

4. गोपागौतम (1984 ई.)

5. बोधिवृक्ष (1985 ई.)

6. जयंत (1986 ई.)

कविताएं लिखने के साथ – साथ जगदीश गुप्त में चित्र बनाने का हुनर भी था। अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों के कवर डॉ. गुप्त ने इतने कलात्मक ढंग से बनाए कि पुस्तक के वे कवर चित्रकला के नमूने में गिने जाने लगे हैं। उस समय के भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित अनेक शीर्षस्थ लेखकों रचनाओं पर डॉ. गुप्त जी के बनाए हुए चित्र ही अंकित हैं। साहित्य और कला का पारस्परिक संबंध उनके सभी कविता संग्रहों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। जिसमें **'नाव के पाँव'** और **'युग्म' चित्रांवित काव्य** जगदीश गुप्त जी के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं जिसमें उनकी कविताओं के साथ – साथ रेखांकन अद्वितीय हैं।

जो वस्तु हम कविता में नहीं दे पाते उसे व्यक्त करने के लिए चित्र की आवश्यकता होती है और जो वस्तु हम चित्र में नहीं दे पाते उसकी पूर्ति पर्याप्त मात्रा में कविता से हो जाती है। चित्र की अपनी सीमाएं हैं और कविता की अपनी। एक की स्थिति समय में है और दूसरे की विस्तार में। चित्र में जैसे जीवन की संपूर्णता एक स्थान पर तराश दी जाती है और कविता में जैसे उसे शब्दों में कसकर बांध दिया जाता है।

डॉ. जगदीश गुप्त की कविता का संसार जितना ही निजी और अंतरंग है उनके रेखांकन और चित्रों का संसार उतना ही समाजोन्मुख और बाहर है। कविता को वो अपने निजी और अंतरंग दुनिया तक सुरक्षित रखते हैं और चित्रकला तथा रेखांकनों की दुनिया से वे पूरे समाज में रमते हुए दिखाई देते हैं।

'कवि वही जो अकथनीय' कहे की अवधारणा वाले डॉ. गुप्त के काव्य सृजन में चित्रों की अकथनीयता शब्द का रूप ले लेती रही तो चित्र रचना में कविता का सत्व समाहित हो जाता रहा। डॉ. गुप्त अपने को पहले चित्रकार मानते थे जबकि कविता को अपनी दूसरी ताकत। उनके लिए कविता अभिव्यक्ति का एक माध्यम थी तो चित्रकला अभिव्यक्ति का दूसरा माध्यम थी। उनकी कविताओं में बहुत सारे चित्र हैं। और उनके चित्रों में बहुत सारी कवितायें। डॉ. जगदीश गुप्त के रेखांकन में उनका कवि रूप बोलता है। इसलिए उनके चित्र सरल कविता जैसे सरस और प्रिय लगते हैं। उनके चित्रों में सुंदर कविता का निखार स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उनके चित्रों में रंगों की नई भाषा और भाव मिलते हैं। तो कविताओं में पूरी चित्रात्मकता।

डॉ. जगदीश गुप्त के चित्रों में कवि हृदय की मार्मिक अभिव्यक्ति स्वतः ही हो गई है। कवि, चित्रकार जगदीश गुप्त के चित्रों में उनका एक और व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है वह प्रागैतिहासिक चित्रों के गहन अध्ययन तथा खोज की प्रवृत्ति, इसी खोज की प्रवृत्ति ने उन्हें पुरातत्ववेत्ता बना दिया। उनके अधिकांश चित्रों में प्रागैतिहासिक चित्रों की झलक मिलती है। भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान है। प्रागैतिहासिक चित्रों में रेखा ही महत्वपूर्ण है। अजंता, एलोरा तथा अन्य गुफाएं इसके साक्षात उदाहरण है कि कम से कम रेखाओं में भावों की अभिव्यक्ति कैसे संभव है। डॉ. जगदीश गुप्त के रेखाचित्रों को देखकर उनके रेखीय कौशल का ज्ञान होता है। उन्होंने भावों के अनुरूप रेखाओं को तीव्र, शिथिल, सरल तथा जटिल चित्रित किया है। उन्होंने चित्रों में भी रेखाओं को ही प्रमुखता दी है।

डॉ. गुप्त ने अकथनीय को केवल कविता के माध्यम से ही अभिव्यक्ति नहीं दी, बल्कि अपने रेखांकनो के जरिए भी उसे व्यक्त किया। उन्होंने अपनी अधिकांश अनुभूतियां कविताओं और चित्रों के साथ–साथ पिरोई हैं, चित्र के साथ कविता और कविता के साथ चित्र। कभी चित्र तो कभी कविता उनकी अनुभूति कौन सा रूप धारण करेगी वे स्वयं नहीं जानते थे। दोनो ही क्षेत्र उनके लिए अकथनीय को दर्शाने का प्रयास हैं।

उनकी प्रकाशित रचनाओं के साथ रेखाचित्रों का संयोग इतना प्रभावशाली था कि अन्य नई कविता के कवियों ने इसके मुकाबले या समानांतर कोई भी ऐसी रचना या कृति नहीं दी जिसे गुप्त जी की नई कविता परंपरा की सांवाहिका कहा जा सके। हालांकि तब से अब तक बीते तमाम वर्षों में नई कविता अपने बदले हुए स्वरूप में निखर कर आई है। बदली हुई जमीन की चिंता जिसमें घुली मिली है। नए प्रतिमान भी खूब गढ़े गए। बिंब प्रतीकों का अंबार नई कविता के संसर्ग के धरातल पर बखूबी देखा जा सकता है। मगर कविता की चित्रमयता और कवि हृदय में चित्रों की काव्यात्मकता का कोई बेजोड़ रचनाकार गुप्त जी की रचनाधर्मिता के समकक्ष इस सदी में अपनी जगह नहीं बना सका।

शोध विषय चयन की प्रेरणा :-

विभाग द्वारा पी. एच. डी. शोधार्थियों को शोध प्रबंधन के विषय चयन हेतु सूचित किया गया तो शोधार्थी ने अपनी शोध निर्देशिका एसोसिएट प्रोफेसर डॉक्टर **नमस्या** से इस बारे में बात की शोधार्थी ने उनको बताया की मेरी रुचि कविताओं में है। इसके उपरांत निर्देशिका डॉ. नमस्या द्वारा शोधार्थी को जगदीश गुप्त जो कि एक प्रतिष्ठित कवि व चित्रकार हैं उनके काव्य संग्रह और चित्रों को लेकर शोध कार्य करने का सुझाव दिया जिसमें **जगदीश गुप्त के काव्य एवं चित्रकला में अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन** नामक शोध विषय पर कार्य करने का निर्णय लिया गया। इसलिए शोधार्थी ने अपने शोध विषय के रूप में **जगदीश गुप्त के काव्य एवं चित्रकला में अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन** शोध विषय का चयन किया।

शोध का उद्देश्य व महत्व:-

शोध पूर्व ज्ञान का परिष्करण एवं परिमार्जन करता है एवं नवीन तथ्यों की खोज के साथ मानवीय ज्ञान को व्यापक एवं बहुआयामी बनाता है। काव्य व चित्रकला दो अलग - अलग विधाएं होते हुए भी समानांतर चलती हैं। चित्रकार जो कार्य रंगो से करता है वही कार्य कवि शब्दों से करता है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य जगदीश गुप्त जी के बहु प्रतिभा

संपन्न व्यक्तित्व से पाठकों को अवगत कराना व यह बताना है कि जब एक ही व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्ति के दो माध्यमों का प्रयोग किया जाता है तो उनमें कोई विरोधाभास आता है, या दोनों में समानता रहती है। साथ ही साथ यह भी जानना है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि एक माध्यम प्रखर हो जाता हो और दूसरा क्षीण। इसका विवेचन व विश्लेषण करना ही शोधार्थी का उद्देश्य रहेगा।

शोध विषय पर हुए पूर्ववर्ती शोधकार्य एवं शोध की मौलिकता :-

किसी भी शोध विषय के चयन के पूर्व यह ध्यान रखना अति आवश्यक होता है कि चयनित शोध विषय पर कितना कार्य हो चुका है। शोधगंगा एवं विभिन्न विश्वविद्यालय की वेबसाइट में मिली जानकारी से यह ज्ञात हुआ है कि जगदीश गुप्त पर अब तक जो भी कार्य हुए है वह शोधार्थी के शोध विषय **जगदीश गुप्त के काव्य एवं चित्रकला में अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन** से भिन्न है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग में **कवि एवं चित्रकार जगदीश गुप्त का व्यक्तित्व और कृतित्व** नामक शोध विषय पर **अर्चना द्विवेदी** द्वारा शोध कार्य किया गया है। जिसमें जगदीश गुप्त के चित्रकार रुप को प्रमुखता दी गई है, जबकि मेरे द्वारा किए जाने वाले शोध कार्य में जगदीश गुप्त के कवि रुप को प्रमुखता देते हुए काव्य एवं चित्रकला का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। यह शोध कार्य पूर्णतया मौलिक व नवीन है। शोधार्थी के शोध कार्य से पूर्व हिंदी में जगदीश गुप्त को लेकर जो भी शोध कार्य हुए है, उसकी सूची नीचे दी जा रही है –

1. हिंदी शतक काव्य परंपरा एवं डॉ. जगदीश गुप्त का ब्रजभाषा काव्य- सिंह अजय , लखनऊ विश्वविद्यालय, 2004
2. युगबोध में जगदीश गुप्त के काव्य – कौशिक कामना, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, 2006
3. डॉ. जगदीश गुप्त के गद्धसाहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन – पांडे सुनील कुमार, लखनऊ विश्वविद्यालय, 2007
4. डॉ. जगदीश गुप्त व्यक्तित्व और कृतित्व – पाठक पद्मावती, बीवीएस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, 2004
5. डॉ. जगदीश गुप्त की काव्य कृतियों का आलोचनात्मक अनुशीलन – शुक्ला पूनम, डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, 2011

साहित्य सर्वेक्षण :-

शोध विषय से संबंधित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त की गई है –

1. दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा

2. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

3. डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय , आगरा

शोध प्रविधि :-

किसी भी शोध कार्य को करते समय शोधार्थी को एक शोध पद्धति का अनुसरण करना होता है। प्रस्तावित शोध कार्य को करते समय शोध की मौलिकता के साथ शोध की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न आधार व संदर्भ ग्रंथों को देखते हुए प्रस्तावित शोध में वर्णानात्मक, विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक व शोध निर्देशिका के साथ की गई विचारात्मक प्रविधि का प्रयोग शोधार्थी द्वारा किया जाएगा। शोध की आवश्यकता के अनुसार प्रश्नावली, साक्षात्कार, शब्द कोश, पत्र-पत्रिकाएं, वेबसाइट, इंटरनेट आदि के प्रयोग द्वारा शोध की तथ्यपरक सामग्री को एकत्रित किया जाएगा।

जगदीश गुप्त के काव्य एवं चित्रकला में अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन

रूपरेखा

प्रथम अध्याय :- भारतीय साहित्य में कवि – चित्रकार : परिचयात्मक विश्लेषण

1.1 भारतीय साहित्य में कवि - चित्रकार

1.2 हिन्दी साहित्य में कवि - चित्रकार

द्वितीय अध्याय :- नई कविता एवं जगदीश गुप्त

2.1 जगदीश गुप्त: समय एवं काल

2.2 नई कविता आंदोलन

2.3 नई कविता: जगदीश गुप्त

तृतीय अध्याय :- जगदीश गुप्त के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

3.1 विषयवस्तु एवं प्रासंगिकता

3.2 रेखांकन:- रेखाओं की गुणवत्ता, आवेग, स्थिरता, गति, स्थिति

3.3 बंगाल शैली तथा प्रयोगवादी चित्र: जगदीश गुप्त का स्थान

चतुर्थ अध्याय :- अनुभूति की एकरूपता : काव्य एवं चित्रकला का तुलनात्मक अध्ययन

4.1 वर्ण्य विषय : साम्य एवं वैषम्य

4.2 अनुभूति की प्रबलता, प्रभाव एवं प्रवाह

4.3 समसामयिक चेतना

पंचम अध्याय:- जगदीश गुप्त : माध्यम की विविधता

5.1 भाषाई विश्लेषण - भाषा, प्रतीक, बिम्ब : कविता संदर्भित

5.2 सतह का चुनाव : चित्र संदर्भित

5.3 माध्यम – रेखांकन व रंगों के चुनाव के प्रकार : चित्र संदर्भित

- **उपसंहार**
- **परिशिष्ट**
- **आधार ग्रंथ**
- **संदर्भ ग्रंथ**
- **चित्र संदर्भ**
- **शब्दकोश**

- **विश्वकोश**
- **पत्र पत्रिकाएं**
- **बेवसाइट**

विशेष:- निर्देशक के परामर्श से अध्यायों में 20% परिवर्तन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

आधार ग्रंथ:-

1. नाव के पाँव, जगदीश गुप्त, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1955
2. शब्द दंश, जगदीश गुप्त, पीतांबरा प्रकाशन नई दिल्ली, 1959
3. हिम बिद्ध, जगदीश गुप्त, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1964
4. युग्म चित्रांवित काव्य, जगदीश गुप्त, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1973
5. शंबूक, जगदीश गुप्त , लोकभारती प्रकाशन, 1977
6. छन्दशती, जगदीश गुप्त, लोकभरती प्रकाशन, 1979
7. आदिक एकांत, जगदीश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1980
8. गोपा गौतम, जगदीश गुप्त, वाणी प्रकाशन, 1984
9. बोधि वृक्ष, जगदीश गुप्त, वाणी प्रकाशन, 1985
10. जयंत, जगदीश गुप्त, जयभरती प्रकाशन, 1986
11. माँ के लिए, जगदीश गुप्त, नई कविता प्रकाशन, 1987
12. सांझ, जगदीश गुप्त, नई कविता प्रकाशन, 1988
13. बहुलोचना नदी, जगदीश गुप्त, जयभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1996
14. आक्रोश के पंजे, जगदीश गुप्त, राका प्रकाशन इलाहाबाद, 1996

सहायक ग्रंथ : -

1 अक्षरा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल, डॉ. सुरेंद्र वर्मा, 2001

2 कला में एशिया की वैचारिक एकरूपता, जगदीश गुप्त, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, 1961

3 कला और संवाद, डॉ. करुणा गुप्ता, संभावना प्रकाशन हापुड़, 2021

4 कला प्रसंग, प्रो. रामचंद्र शुक्ल, करोना आर्ट प्रकाशन, 1965

5 कवि चित्रकार जगदीश गुप्त, डॉ. अर्चना द्विवेदी, सरोज प्रकाशन सागर(म. प्र.), 2014

6 चित्रकला के मूल आधार – डॉ. मोहन सिंह मावड़ी, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, 2017

7 चित्रकला कविता की देशे, सुनील गंगोपाध्याय, राजकमल प्रकाशन, 2015

8 जगदीश गुप्त: व्यक्ति और काव्य, डॉ. प्रकाश त्रिपाठी, हिंदुस्तानी अकादमी इलाहाबाद, 2010

9 भारतीय कला के पदचिह्न, डॉ. जगदीश गुप्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 1961

10 समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, ज्योतिष जोशी, अंक 15-16, 1995

11 सांस्कृतिक समुच्चय, श्री दूधनाथ सिंह, 2002

12 साहित्यकार मित्र, लक्ष्मीकांत वर्मा, 2001

13 वागर्थ, अनिल सिद्धार्थ, अंक 76, कोलकाता, 2001

शब्दकोश :-

1. हिन्दी साहित्य कोश भाग-1, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण 1985.
2. हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, डॉ. देवदत्त राय, लक्ष्मी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010.
3. मानक हिन्दी पर्याय कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, विद्या प्रकाशन मन्दिर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989.
4. मानक हिन्दी कोश खण्ड-3, संपादक वर्मा रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1964.
5. बृहत प्रमाणिक हिन्दी कोश: संपादक आचार्य रामचंद्र वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, 1964

बेवसाइट :-

https://hi.wikipedia.org

www.Jagdishgupt.com

www.argalaa.org

www.hindwi.org

www.rachnakar.com

पत्र पत्रिकाएं :-

समकालीन कला – ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 1995

वागर्थ – भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, अंक-76, 2001

आजकल – भारत सरकार प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 2011

अक्षरा – राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल, 2001